समाचार वाणी

ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 24 September 2026

सिर्फ एक रणनीति से भारत की अर्थव्यवस्था चीन के बराबर हो जाएगी : नीति आयोग सदस्य अरविंद विरमानी।

Publisher

Published on 28 May 2025

नीति आयोग के वरिष्ठ सदस्य ने कहा- 2025 तक भारत जापान को पछाड़ेगा और 2027-28 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा

नई दिल्ली : भारत की अर्थव्यवस्था तेज़ी से प्रगति की ओर बढ़ रही है और आने वाले कुछ वर्षों में यह **विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं** में शामिल हो जाएगी। **नीति आयोग के सदस्य डॉ. अरविंद विरमानी** ने हाल ही में एक इंटरव्यू में यह स्पष्ट किया कि अगर **भारत 6% से 6.5%** की वार्षिक दर से आगे बढ़ता रहा, तो 2050 तक भारतीय अर्थव्यवस्था चीन के बराबर पहुंच सकती है।

उन्होंने कहा कि भारत जल्द ही जापान को पछाड़ते हुए दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसके बाद 2027 या 2028 तक भारत तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा और जर्मनी को पीछे छोड़ देगा।

IMF की पुष्टि :
आईएमएफ ने अप्रैल 2025 में जारी अपने **विश्व आर्थिक परिदृश्य (World Economic Outlook)** में बताया था कि भारत की **जीडीपी 2025 तक 4.19 ट्रिलियन डॉलर** तक पहुंच सकती है, जिससे भारत जापान से आगे निकल जाएगा।

चीन के बराबरी का रास्ता :
डॉ. विरमानी के अनुसार, यदि भारत की आर्थिक वृद्धि अगले 25 वर्षों तक इसी गति से बनी रही तो भारत चीन के बराबर आर्थिक ताकत बन सकता है। उन्होंने भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

व्यापार मे स्पष्टता की आवश्यकता :

उन्होंने यह भी कहा कि भारत के **अंतरराष्ट्रीय व्यापार** को और अधिक गति देने के लिए **टैरिफ (शुल्क)** से जुड़ी अनिश्चितताओं को समाप्त करना होगा, जिससे वैश्विक निवेश और व्यापार में स्थिरता आए।

नीति आयोग के CEO की टिप्पणी :

हाल ही में नीति आयोग के **CEO बीवीआर सुब्रह्मण्यम** ने भी इसी दिशा में एक बयान दिया था कि **IMF** के आंकड़ों के अनुसार भारत जापान से आगे निकल चुका है और वर्तमान में **भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** बन चुका है।

ऐसी ही देश और दुनिया की बड़ी खबरों के लिए फॉलो करें: www.samacharwani.com

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.